REET 2025
LEVEL-1&2
वंदन बैच
संस्कृत
छंद
Part -2
LIVE
08-02-2025 03:00 PM

छन्द (लेवल 1 व 2 की भाषा द्वितीय के लिए)

वर्ण या मात्रा की निश्चित संख्या एवं क्रम

छंद
- मात्रिक
  - आर्या → 12, 18, 12/15 मात्रा
- वार्णिक
  - अनुष्टुप
  - (8×4) → 32

छन्द शास्त्र परिचय:

छन्द शास्त्र अत्यन्त प्राचीन शास्त्र है जिसका नाम छन्दोविचिति है। आचार्य पिंगल छन्दशास्त्र के प्रथम आचार्य हुए हैं। इनका दूसरा नाम नागराज है। इनकी पुस्तक 'छन्दसूत्रम्' (पिंगल सूत्रम्) के नाम से प्रसिद्ध है। छन्दसूत्रम् के आधार पर ही छन्दोनुशासन, रत्नमंजुषा, वृत्तरत्नाकर, सृवृन्त तिलक, श्रुतवोध, छन्दोमंजरी आदि ग्रन्थों की रचना हुई। वेदों में तो मात्र छः छन्दों का ही प्रयोग हुआ है, परन्तु समय-सरित के प्रवाह के साथ अनेक छन्दों ने जन्म लिया तथा इनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती चली गई।

छन्द की परिभाषा:

निश्चित वर्ण या मात्राओं को पाद या चरण मानकर रचे गये वाक्य या वाक्य समूह को छन्द कहते हैं। श्लोक शब्द का प्रयोग पहले अनुष्टुप् छन्द के लिए होता था, आजकल तो व्यवहार में संस्कृत भाषा में छन्द सामान्यं के लिए श्लोक शब्द का प्रयोग होता है। पद्य शब्द की भी ऐसी ही स्थिति हैं। पाद- ज्ञेय पादः चतुर्थांशः अर्थात् श्लोक के चौथे भाग को पाद कहा जाता है।

छन्द के भेदः

छन्द दो प्रकार के होते हैं-

(1) वर्णिक (वृत्त) छन्द

(2) मात्रिक (जाति) छन्द

वर्णिक छन्द-

जिन छन्दों के चरण या पाद वर्णों की संख्या पर निर्भर हों, उन्हें वर्णिक छन्द कहते हैं। जैसे- इन्द्रवज्रा, वंशस्य आदि। वृत्त तीन प्रकार का होता है।

समवृत्त- जिन छन्दों के चारों चरणों में मात्राएँ या वर्ण समान संख्या में होते हैं, उन्हें समवृत्त छन्द कहते हैं जैसे अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा आदि।

अर्द्धसमवृत्त- जिन छन्दों के प्रथम व तृतीय में तथा द्वितीय व चतुर्थ चरणों में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या समान होती है, उन्हें अर्द्धसमवृत्त कहते हैं। जैसे- वियोगिनी, पुष्पिताग्रा, हरिणप्लुता।

विषमवृत्त- जिन छन्दों के चारों चरणों में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न हो उन छन्द को विषमवृत्त या विषम वर्णिक छन्द कहते हैं।

जैसे - आर्या।

मात्रिक छन्द-

जिन छन्दों के पाद या चरण मात्राओं की संख्या पर निर्भर हो, उन्हें मात्रिक छन्द कहते हैं। जैसे आर्या।

मात्रा- स्वर वर्ण का निश्चित उच्चारण काल मात्रा कहा जाता है इसके दो भेद होते हैं-
(1) लघु (2) दीर्घ गुरु

लघु की मात्रा

जहाँ अ, इ, उ, ऋ, ऌ का उच्चारण हो वहाँ ह्रस्व/लघु की मात्रा लगती है इसके लिए वर्ण के ऊपर (1) एक लकीर लगा देते हैं।

जैसे- अमर ऋषि शुभ ऌक

गुरु की मात्रा-

• जहाँ आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ए, ओ, औ की मात्रा लगी हो तो वहाँ गुरु की मात्रा लगती है।

जैसे-

आधारा, राकेशः

• जिस वर्ण में अनुस्वार तथा विसर्ग लगा हो तो गुरु की मात्रा होती है।

जैसे- संयम, संयोग, रामः ।

संयुक्त वर्ण से पहला वर्ण गुरु होता है, जब दो या दो से अधिक व्यंजन वर्ण एक जगह मिल जाते हैं, वह संयुक्त वर्ण होता है।

जैसे- विज्ञान, भिक्षुका। हलन्त व आधा वर्ण में मात्रा नहीं लगाते हैं, हलन्त व आधा वर्ण से पूर्व का वर्ण गुरु होता है। जैसे जगत्। • संयुक्त वर्ण में अन्तिम वर्ण के उच्चारण के अनुसोर मात्रा लगती है।

छन्द के नियम के अनुसार चरण का अन्तिम वर्ण बदल जाता है अर्थात् लघु होने पर भी दीर्घ हो जाता है।

• संयुक्ताक्षर

= क्ष = क् + ष

= त्र = त् + र

= ज्ञ = ज् + ञ

* अवग्रह (ऽ) की कोई गिनती नहीं होती है, सम्बोधन के चिन्ह का भी कोई महत्त्व नहीं होता है।

• दीर्घ या गुरु के लिए वर्ण के ऊपर ऽ का चिन्ह लगा देते हैं।

• ह्रस्व वर्ण कब दीर्घ हो जाता है।

(i) अनुस्वार तथा विसर्ग लगने पर अं, अः

(ii) संयुक्त वर्ण से पूर्व आने पर

(iii) छन्द के लक्षण के अनुसार अन्तिम ह्रस्व भी दीर्घ हो जाता है।

जैसे नक्षत्र, नक्षत्रम् ।

गण- वर्णों या मात्राओं के समूह को गण कहते हैं, गण दो प्रकार के होते हैं। वर्णात्मक और मात्रात्मक।

वर्णात्मक गण- तीन वर्षों के समूह को वर्णात्मक गण कहते हैं। तीन वर्णों का समूह एक गण होता है।

गण सूत्रम् - यमाताराजभान सलगा:

गण आठ होते हैं। एक गण में तीन वर्ण आते हैं।

1.	यगण	यमाता	।SS	यशोदा
2.	मगण	मातारा	SSS	मान्धात
3.	तगण	ताराज	SS।	तेजस्वि
4.	रगण	राजभा	S।S	राधिक
5.	जगण	जभान	।S।	जयन्त
6.	भगण	भानस	S।।	भारत
7.	नगण	नसल	।।।	रमन
8.	सगण	सलगा	।।S	सरला

जिस गण का स्वरूप याद करना हो उस गण को लिख देते हैं तथा उसके बाद दो -अक्षर जोड़ देते हैं।

जैसे - यगण यमाता बाद में उनके ऊपर लघु / गुरु का चिन्ह लगा देते हैं।

सूत्र-" आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्तिगौरवम् यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्"

आदिगुरु – भगण –

मध्यगुरु – जगण –

अवसानगुरु – सगण –

यरता - यगण –

रगण

तगण

मनौ – मगण

नगण

सूत्र- मस्त्रि गुरुस्त्रि लघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः जो गुरुमध्यगतो रत्नमध्य सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः

अर्थ-

मस्त्रिगुरुः मगण में तीनों गुरु 555

नकारः त्रिलघु नगण में तीनों लघु

भादिगुरुः भगण आदि में गुरु

आदि लघुर्य यगण आदि में लघु

जो गुरु मध्यगतः = जगण में मध्य में गुरु

रलमध्यः रगण मध्य में लघु

सोऽन्तगुरुः = सगण के अन्त में गुरु

अन्त लघुस्तः तगण अन्त में लघु

यति या विराम-

- छन्द के उच्चारण में मधुरता लाने के लिए जहाँ रुका जाता है, उसे यति कहते हैं। सभी छन्दों के पाद के अन्त में यति होती है। कुछ छन्दों के बीच में भी यति होती है।
- जब समान वर्णिक छन्द एक छन्द में होते हैं, तो उसे जाति कहते हैं।
- एक निश्चित वर्ण, संज्ञाओं के चरणों से बनने वाले भिन्न-भिन्न नामों के छन्दों की एक जाति बनती है। जातियों की संख्या 26 है।
- छन्द शास्त्र में एक चरण या पद में अधिकतम वर्ण 26 आते हैं तथा कम से. कम एक आता है।

- ❖ छन्द शास्त्र में 26 वर्षों से अधिक वर्षों के चरण होने पर या पाद होने पर
- ❖ दण्डक कहलाता है। चार से अधिक पाँच या 6 पाद होने पर वह छन्द गाथा कहलाता है।

छन्दों के लक्षण और उदाहरण

❖ **मात्रिक छन्द:** मात्रिक छन्द में मात्रा की गणना होती है लघु की एक तथा गुरु की दो मात्राएँ होती हैं-

आर्या छन्द

❖ **लक्षण:** यस्याः प्रथमे पादे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि। अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पंचदश साऽऽर्या ॥

अर्थः

जिस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण में 12-12 मात्रा होती हैं। दूसरे में 18 तथा चौथे में 15 मात्रा होती हैं, वहाँ आर्या छन्द होता है।

पहचान :

- यदि दो पंक्ति के श्लोक में ऊपर की पंक्ति बड़ी तथा नीचे की पंक्ति छोटी हो, तो वहाँ आर्या छन्द की संभावना होती है।
- पहले चरण में 7 वर्ण या 9 वर्ण हों तो वहाँ आर्या छन्द की संभावना होती है।

❖ उदाहरणः-

वर्णिक छन्द:

(2) अनुष्टुप् छन्द :

• **लक्षण :-**

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पंचमम् ।

द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घ मन्ययोः ॥

• **लक्षण का अर्थ -** जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 8-8 वर्ण होते हैं चारों चरणों में पाँचवा वर्ण लघु और छठा वर्ण गुरु होता है। पहले और तीसरे में सातवां वर्ण गुरु तथा दूसरे और चौथे चरण में सातवां वर्ण लघु होता है।

वहाँ अनुष्टुप् छन्द होता है। अनुष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण में 8 अक्षर होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में 32 अक्षर होते हैं।

उदहारण

1. गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

2:... शैले-शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे-गजे। साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥

3. वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये । जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥

(3) इन्द्रवज्रा छन्द

11 वर्ण × 4 = 44 वर्ण

लक्षण- स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, तगण, जगण एवं अन्त में दो गुरु वर्ण आते हैं। इस प्रकार प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं, वहाँ इन्द्रवज्रा छन्द होता है।

तौ जगौ गः

तगण	तगण	जगण	गुरु	गुरु
ऽऽ।	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ	ऽ

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

उदहारण-

तगज तगज जगज - गु.गु.

1. हे कृष्ण! गोविन्द ! हरे मुरारे! हे नाथ! नारायण! वासुदेवः !

2. अर्थो हि कन्या परकीय एवं तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः

S S I S S I I S I S I S S I S S I I S I S S

जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।

S S I S S I I S I S S S S I S S I I S I S S

3. श्रीनाथ नारायण वासुदेवं श्रीकृष्ण भक्तप्रिय चक्रपाणे।

श्रीपद्मनाभाच्युत कैटभारे, श्रीराम पद्माक्ष हरे मुरारे ॥

अ इ उ ऋ लृ = I

आ ई ऊ ए ऐ = S

ओ औ

(4) उपेन्द्रवज्रा छन्द

11 x 4 = 44 व॰

लक्षण:-

तगण SSI जगण ISI

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं, उसे उपेन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं। उपेन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं इस प्रकार चारों चरणों में 44 वर्ण होते हैं।

जगण तगण जगण गुरु गुरु

उदाहरण-

1. त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेवं, त्वमेव सर्व मम देव देवः ॥

2. परोपकाराय फलन्ति वृक्षा, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकार्थमिदं शरीरम् ॥

3. सुखस्य दुखस्य नकोऽपि दाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।

अहं करोमीति भृषाभिमानः, स्वकर्म सूत्र ग्रथितो हि लोकः ॥

याज्ञवल्क्य
लघु

ऽ अ इ उ ऋ = लघु - ।

आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ = ऽ

द्रविणं
। । ऽ

संयोगे पूर्वः = गुरु

गुरुः
ऽ

प्रत्यर्पित
ऽ ऽ

(5) उपजाति छन्द

11×4=44

लक्षण-

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः, उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ

अनन्तरोदिरित लक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः

जिस छन्द में इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के लक्षण मिले होते हैं, उसे उपजाति कहते हैं।

उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण, इस प्रकार चारों चरणों में 44 वर्ण होते हैं।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

उदाहरण

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मर्त्यलोके भुविभारभूताः, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्नतु कङ्कणेन।

विभाति कायः करुणा पराणाम् परोपकारेण च चन्दनेन ॥

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता, तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।

कालो न यातो वयमेव याताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

5) वंशस्य छन्द

12×4=48

लक्षण - जतौ तु वंशस्य मुदीरितं जरौ वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण, रगण होते हैं।

उदाहरण-

जगण तगण जगण रगण

जतौ जरौ

जगण तगण जगण रगण

ISI SSI ISI SIS

यमाताराजभानसलगा

SS I I S I

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

1. भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमः, नवाम्बुविर्दूरविलम्बिनो घनाः। अनुद्धताः सत्यपुरुषाः समृद्धिभिः, स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्

2. इदं किलाव्याज मनोहरं वपुः, तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति। ध्रुवं स नीलोत्पलपत्र धारया, शमीलतां छेन्तुमृषि व्यवस्याति।

(7) द्रुतविलम्बित छन्द

लक्षण- द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरी जिस छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण तथा रगण होते हैं, उसे द्रुतविलम्बित छन्द कहते हैं।

इसमें प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं इस प्रकार चारों चरणों में 48 वर्ण होते हैं।

उदाहरण

नगण = ।।।

नवपलाश पलाश वन पुरः, स्फुटपराग परागतपङ्कजम्

मृदुलतान्तलतान्त मलोकयत्, स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः ॥

उदाहरण-

इतर पाप फलानि यदृच्छया, वितरतानि सहे चतुरानन
अरसिकेषु कवित्वनिवेदनम्, शिरसि मालिख मालिख मालिख ॥

9) भुजंगप्रयात छन्द

लक्षण- भुजंगप्रयात चतुर्भिः यकारैः। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं, उसे भुजंगप्रयात छन्द कहते हैं। इसमें प्रत्येक चरण में 12-12 वर्ण होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में 48 वर्ण होते हैं।

उदाहरण-

ISS

यमाता

ISS

यगण यगण यगण यगण

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यम्।
ISS
त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
ISS

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

(9) वसन्ततिलका

लक्षण-

उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौग: जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण हों तो उसे वसन्ततिलका छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण, इस प्रकार चारों चरणों में 56 वर्ण होते हैं।

उदाहरण-

पद्माकरः दिनकरो विकची करोती, चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ।

नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति, सन्तः स्वयं परहिते विहिताभिः योगाः।

(2) जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं, मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति

चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं, सत्संगति कथय किं न करोति पुंसाम्

(10) मालिनी छन्द

$15 \times 4 = 60$

लक्षण नन मयययुतेयं मालिनी भोगि लोकैः जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण, यगण होते हैं तथा 8 और 7 वर्षों के बाद यति होती है, उसे मालिनी छन्द कहते हैं। मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं इस प्रकार चारों चरणों में 60 वर्ण होते हैं।

नगण नगण। मगण। यगण। यगण।

सरसिजमनु विद्धं, शैवलेनापि रम्य।

मालिनमपि हिमांशो, र्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिक मनोज्ञा, वल्कलेनापि तन्वी।

किमिव हि मधुराणां, मण्डनं नाकृतीनाम् ।

(11) मन्दाक्रान्ता छन्द

17 × 4 = 68

लक्षण : मन्दाक्रान्ताम्बुधि रसनगैः म्भौनतौतगौग:

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण होते है तथा 4, 6 और 7 वर्षों के बाद यति होती है, उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं।

इसके प्रत्येक चरण में 17-17 वर्ण होते है। इस प्रकार चारों चरणों में 68 वर्ण होते है।

मगण, भगण, नगण, तगण, तगण, गु, गुरु

SSI

उदाहरण-

तीव्राघात, प्रतिहततरुः, स्कन्ध लग्नकदत्तः।
S S S
पादाकृष्ट, व्रतति वलया, संगसंजात पाशः।

मूर्ती विघ्नः तपस इननो भिन्न सारंग यूथो।

धर्मारण्यं, प्रविशति गजः, स्यन्दना लोकभीतः ।

12) शिखरिणी छन्द

17×4=68

लक्षण:

रसैः रुद्रैः छिन्ना यमन सभ लागः शिखरिणी।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा अन्त में एक लघु वर्ण और एक गुरु वर्ण होता है तथा 6 और 11 वर्षों के बाद यति होती है, उसे शिखरिणी छन्द कहते हैं।

यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

ISS

REET 2025 L - 1 & 2 संस्कृत वंदन बैच

उदा. यगण मगण नगण सगण भगण लगु.

यदा लोके सूक्ष्मं, व्रजत सहसा तद्विपुलता।

यदर्थे विच्छिन्नं, भवति कृत संधानामिव तत्।

प्रकृत्या यद्वक्रं, तदपि समरेखं नयनयोः।

न मे दूरे किंचित्क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्।

(13) शार्दूल विक्रीडित छन्द

लक्षण: सूर्याश्वैः मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितं । जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा अन्त में एक गुरु वर्ण होता है तथा 12 और 7 वर्षों के बाद यति होती है, उसे शार्दूल विक्रीडित छन्द कहते हैं।

शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं।

मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण, गुरु

उदाहरण-

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वला:
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं, नालंकृता मूर्धजा:।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्तेऽखिल भूषणानि सततं, वाग्भूषणम् भूषणम् ॥

(14) स्त्रग्धरा छन्द

लक्षण: प्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनि यति युता स्रग्धरा कीर्तितेयम्। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण और 3 यगण होते हैं तथा 7, 7 और 7 वर्षों के बाद यति होती है, उसे स्रग्धरा छन्द कहते हैं। स्रग्धरा छन्द के प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में 84 वर्ण होते हैं।

मगण रगण भगण नगण यगण यगण यगण

REEET 2025 L - 1&2 संस्कृत वंदन बैच

ग्रीवाभंगाभिराम मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः
पश्चार्धेन प्रविष्टः, शरपतनभयाद्, भूयसा पूर्व कायम्
दर्भैरर्द्धावलीढैः श्रमविवृतमुख भ्रंशिभिः कीर्ण वर्मा
पश्योपग्रप्लुतत्त्वाद् वियति बहुतरं, स्तोकमुर्व्यां प्रयाति ।

छन्द शास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् एवं ग्रन्थ-

पिंगल	छन्द सूत्रम् (पिंगल सूत्रम्)
कालिदास	श्रुतबोध
क्षेमेन्द्र	सुवृत्त तिलक
हेमचन्द्र	छन्दोनुशासनम्
केदार भट्ट	वृत्तरत्नाकर
जयदेव	छन्दोनुशासनम्
गंगादास	छन्दोमंजरी

दामोदर मिश्र	वाणी भूषण
दुःख भंजन	वाग्वल्लभ
छन्दोविचिति	जानाश्रयी
भट्टशेखर	वृत्तमौक्तिक
श्रीकृष्णभट्ट (जयपुर)	वृत्त मुक्तावली

यति/विराम

वंशस्थ	4+7
मालिनी	8+7
शिखरिणी	6+11
मन्दाक्रान्ता	4+6+7
शार्दूलविक्रीडितम्	12+7
स्रग्धरा	7+ 7 +7

छन्द का नाम	वर्ण	पहला गण
इन्द्रवज्रा	11-5	तगण
उपेन्द्रवज्रा	11	जगण
वंशस्थ	12	जगण
द्रुतविलम्बित	12	नगण
भुजंगप्रयातम्	12	यगण